ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–८६
दिनांक- मंगलवार, ०९ नवम्बर, २०२१

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय बेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 29.3 एवं 15.2 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 97 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 53 प्रतिशत, हवा की औसत गति 5.0 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 2.3 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 5.7 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 19.7 एवं दोपहर में 29.4 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(10–14 नवम्बर, 2021)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 10–14 नवम्बर, 2021 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के से मध्यम बादल रह सकते हैं। इस दौरान मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान 29 से 30 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। न्यूनतम तापमान 17 से 18 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 60 से 70 प्रतिशत तथा दोपहर में 30 से 40 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- औसतन 4 से 5 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से अगले 2–3 दिनों तक पछिया तथा उसके बाद पूरवा हवा चलने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- गेंहुँ की बुआई के लिए इस समय खेत में अच्छी नमी, तापमान तथा अन्य मौसमीय परिस्थितियाँ अनुकूल है। किसान भाई अब गेहुँ की बुआई शुरू कर सकते है। खेत की तैयारी के समय १५०-२०० क्विटल कम्पोस्ट, ६० किलोग्राम नेत्रजन, ६० किलोग्राम फॉसफोरस एवं ४० किलोग्राम पोटास प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। बुआई हेतु पी०बी०डब्लू०-३४३, पी०बी०डब्लू०-४४३, सी०बी०डब्लू०-३८, डी०बी०डब्लू०-३९, एच०डी०-२७३३, एच०डी०-२८२४, के०-९१०७, के०-३०७, एच०यू०डब्लू०- २०६ एवं एच०यू०डब्लू०-४६८ किस्में उत्तर बिहार के लिए अनुषंसित है। बीज को बुबाई से पहले २.५ ग्राम बेबीस्टीन की दर से प्रति किलोग्राम बीज को उपचारित करें। छिटकबाँ विधि से बुआई के लिए प्रति हेक्टेयर १२५ किलोग्राम तथा सीड ड्रील से पंक्ति में बुआई के लिए १०० किलोग्राम बीज का व्यवहार करें।
- आलू की रोपाई प्राथमिकता देकर करें। कुफरी चन्द्रमुखी, कुफरी अशोका, कुफरी बादशाह, कुफरी ज्योति, कुफरी सिंदुरी, कुफरी अरुण, राजेन्द्र आलू-१, राजेन्द्र आलू- २ तथा राजेन्द्र आलू-३ इस क्षेत्र के लिए अनुसंषित किस्में है। बीज दर २०-२५ क्विंटल प्रति हेक्टेयर रखे। पंक्ति से पक्ति की दुरी ५०-६० से०मी० एवं बीज से बीज की दुरी १५-२० से०मी० रखें। आलू को काट कर लगाने पर २ से ३ स्वस्थ आँख वाले टुकडे को उपचारित कर २४ घंटे के अन्दर लगावे। बीज को एगलाँल या एमीसान के ०.५ प्रतिषत घोल या डाइथेन एम० ४५ के ०.२ प्रतिषत घोल में १० मिनट तक उपचारित कर छाया में सुखाकर रोपनी करे। समूचा आलू (२०-४० ग्राम) लगाना श्रेष्ठकर है। खेत की जुताई में कम्पोस्ट २००-२५० क्विटल, ७५ किलोग्रम नेत्रजन, ६० किलोग्रम फास्फोरस एवं १०० किलोग्रम पोटाष प्रति हेक्टर की दर से प्रयोग करें।
- चना की बुआई के लिए मौसम अनुकूल है। बुआई के समय २० किलोग्राम नेत्रजन, ४५ किलोग्राम फॉसफोरस, २० किलोग्राम पोटास एवं २० किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। चना के लिए उन्नत किस्म पूसा-२५६, के०पी०जी०-५६(उदय) एवं पूसा ३७२ अनुशंसित हैं। बीज को बेबीस्टीन २.५ ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें। २४ घंटा बाद उपचारित बीज को कजरा पिल्लू से बचाव हेतु क्लोरपाईरीफॉस ८ मि०ली० प्रति किलोग्राम की दर से मिलावें। पुनः ४ से ५ घंटे छाया में रखने के बाद राईजोबीयम कल्चर (पॉच पैकेट प्रति हेक्टेयर) से उपचारित कर बुआई करें।
- रबी मक्का की बुआई प्राथमिकता देकर करें। इसके लिए संकर किस्में शक्तिमान १ सफेद, शक्तिमान २ सफेद, शक्तिमान-३ पीला, शक्तिमान ४ पीला, शक्तिमान-५ पीला, गंगा ११ नारंगी पीला, राजेन्द्र संकर मक्का १, राजेन्द्र संकर मक्का २ एवं राजेन्द्र संकर मक्का दीप ज्वाला तथा संकुल किस्में- देवकी सफेद, लक्ष्मी सफेद एवं सुआन पीला इस क्षेत्र के लिए अनुसंशित है। खेत की जुताई में १००-१५० क्विंटल कम्पोस्ट, ६० किलोग्रम नेत्रजन, ७५ किलोग्रम फास्फोरस एवं ५० किलोग्रम पोटाश प्रति हेक्टर की दर से व्यवहार करें। बीज दर २० किलोग्रम प्रति हेक्टेयर तथा दूरी ६० ग २० से०मी० रखें।
- बैगन की फसल में फल एवं कलगी वेधक कीट की निगरानी करें। इस कीट के पिल्लू बैगन के कोमल टहनियों, तनों में छेद कर के सुरंग बनाती हुई अन्दर घुस जाती है जिससे ऊपर की फुन्गी मुरझाकर लटक जाती है। पौधे में फल आने पर यह पिल्लू फलों के बाह्य दल के अन्दर छेद करके फलों में प्रवेश करती है फलों के अन्दर गूदा को खाती है तथा कभी-कभी फफूंद रोग उत्पन्न करती है। ग्रसित फल टेढ़े-मेढ़े हो जाते है और खाने योग्य नहीं रहते है। इसकी रोकथाम के लिए स्पिनोसेड ४८ इ०सी०/१ मि०ली० प्रति ४ ली० पानी की दर से छिड़काव करे। छिड़काव से पूर्व इस कीट से ग्रसित तना एवं फल की तुराई कर मिट्टी में गाड़ दें।
- ठंढ़ के मौसम में दुधारु पशुओं को सुखे स्थानों पर रखें एवं जलजमाव, गोबर मुत्र जमाव नहीं होने दें। दाने में तेलहन अनाज की मात्रा बढ़ा दें। पशुओं को प्रातः नौ बजे से पहले एवं शाम पाँच बजे के बाद बाड़े से बाहर नहीं निकालें। नवम्बर से मार्च माह तक पशुओं को डेगनाला रोग से बचाव के लिए धान की पुआँल को सुखाकर एवं हरे चारे के साथ खिलावें। फफूंद लगे पुआँल को खिलाने से डेगनाला रोग की संभावना बढ़ जाती है।

आज का अधिकतम तापमानः 30.3 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 0.3 डिग्री सेल्सियस अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः 15.3 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 0.5 डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी